Faizane Imam Baaqir (Hindi)

हफ़्तावार रिसाला : 255
Weekly Booklet : 255

رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه

फ़ैज़ाने इमाम बाक़िर

सफ़्हात 24

सोने की ज़न्जीर 05

बुरी मौत से बचने का नुस्ख़ा 13

मौला अली के नज़्दीक पहला ख़लीफ़ा 09

गुलामे अहले बैत के लिये खुश ख़बरी 16

पेशकश :
मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या
(दा'वते इस्लामी)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े ख़ोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (مُسْتَطْرَف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

नामे रिसाला : **फ़ैज़ाने इमाम बाक़िर** رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه

सिने त़बाअ़त : **1443** हि., **2022** ई.

ता'दाद : 000

नाशिर : **मक्तबतुल मदीना**

मदनी इल्तिजा : किसी और को येह रिसाला छापने की इजाज़त नहीं है।

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)

येह रिसाला "**फ़ैज़ाने इमाम बाक़िर** رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه" मजलिसे **अल मदीनतुल इल्मिय्या** (दा'वते इस्लामी) ने **उर्दू** ज़बान में मुरत्तब किया है। ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक्तबतुल मदीना** से शाएअ करवाया है।

इस रिसाले में अगर किसी जगह कमी बेशी या ग़लती पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअए मक्तूब, Email या SMS) मुत्तलअ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबिता : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)

मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाज़ा, अहमदआबाद-1, गुजरात।

MO. 98987 32611 • E-mail : hind.printing92@gmail.com

क़ियामत के रोज़ हसरत

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : सब से ज़ियादा हसरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इल्म हासिल करने का मौक़अ मिला मगर उस ने हासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इल्म हासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़अ उठाया लेकिन इस ने न उठाया (या'नी उस इल्म पर अमल न किया)। (تاریخ دمشق لابن عساکر ج۵۱ص۱۳۸ دارالفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की तबाअत में नुमायां ख़राबी हो या सफ़हात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो **मक्तबतुल मदीना** से रुजूअ फ़रमाइये।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

फ़ैज़ाने इमाम बाक़िर رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ

दुआए अ़त्तार : या रब्बल मुस्त़फ़ा ! जो कोई 22 सफ़्ह़ात का रिसाला : "**फ़ैज़ाने इमाम बाक़िर**" पढ़ या सुन ले, उसे अपने प्यारे प्यारे आख़िरी नबी (صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) और सह़ाबा व अहले बैत की ग़ुलामी और दा'वते इस्लामी में इस्तिक़ामत दे कर जन्नतुल फ़िरदौस में बिला ह़िसाब दाख़िल फ़रमा । اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

ख़्वाजए ख़्वाजगान, ह़ज़रते ख़्वाजा ग़ुलाम ह़सन सवाग अल मा'रूफ़ "पीर सवाग" رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ फ़रमाते हैं : जब बहुत ग़म और मुश्किलात आ जाएं तो दुरूद शरीफ़ की कसरत ही तमाम मुश्किलात को ह़ल करती है । (फ़ुयूज़ाते हुसैनिया, स. 193)

मुश्किल जो सर पे आ पड़ी तेरे ही नाम से टली
मुश्किल कुशा है तेरा नाम तुझ पर दुरूद और सलाम

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰهُ علی مُحَمَّد

ग़ैबी ख़बर

अहले बैते अत़्हार के रोशन चश्मो चराग़ इमाम बाक़िर رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ बचपन शरीफ़ में सह़ाबिये रसूल ह़ज़रते जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुए चूंकि आख़िरी उ़म्र में आप की बीनाई शरीफ़ कमज़ोर हो गई थी इस लिये आप ने पूछा : आप कौन हैं ? तो ह़ज़रते

इमाम बाक़िर رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने जवाब दिया : मुहम्मद बिन अ़ली बिन हुसैन बिन अ़लिय्युल मुर्तज़ा (رَضِیَ اللهُ عَنْهُم) । येह सुनते ही आप رَضِیَ اللهُ عَنْه ने आगे बढ़ कर इमाम बाक़िर رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के हाथों को चूम लिया और फ़रमाया : **अल्लाह** पाक के प्यारे नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने आप को सलाम इर्शाद फ़रमाया है। वहां मौजूद हाज़िरीन ने आप से अ़र्ज़ किया : हुज़ूर ! येह कैसे हो सकता है ? (क्यूं कि हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उस वक़्त ज़ाहिरी तौ़र पर पर्दा फ़रमा चुके थे।) इस पर ह़ज़रते जाबिर رَضِیَ اللهُ عَنْه ने बयान फ़रमाया : एक मरतबा मैं रह़मते दो आ़लम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर था और आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मुबारक गोद में नवासए रसूल, जिगर गोशए बतूल, ह़ज़रते इमामे हुसैन رَضِیَ اللهُ عَنْه खेल रहे थे । नानाए हुसैन صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ऐ जाबिर ! मेरे इस बेटे के हां एक बेटा पैदा होगा जिस का नाम अ़ली (ज़ैनुल आ़बिदीन) होगा, जब क़ियामत का दिन होगा तो एक आवाज़ लगाने वाला आवाज़ लगाएगा : सय्यिदुल आ़बिदीन खड़े हों ! तो वोह खड़ा होगा । फिर उस के हां एक बेटा पैदा होगा जिस का नाम मुह़म्मद होगा। ऐ जाबिर ! तुम उन को देखोगे, जब उन से मिलो तो मेरा सलाम कहना । (صواعق المحرقہ، ص201)

अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो । اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

तेरी नस्ले पाक में है बच्चा बच्चा नूर का तू है ऐ़ने नूर तेरा सब घराना नूर का

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

विलादत व तआ़रुफ़

शहज़ादिये कौनैन, ह़ज़रते बीबी फ़ातिमा رَضِیَ اللهُ عَنْهَا के दिल के चैन, ह़ज़रते इमामे ह़ुसैन رَضِیَ اللهُ عَنْه के पोते और इमाम ज़ैनुल आ़बिदीन رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के शहज़ादे, सिल्सिलए क़ादिरिय्या रज़विय्या अ़त्तारिय्या के पांचवें शैख़े त़रीक़त ह़ज़रते इमाम बाक़िर رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه हैं। आप का मुबारक नाम मुह़म्मद, कुन्यत अबू जा'फ़र और लक़ब बाक़िर, शाकिर और हादी (या'नी हिदायत देने वाला) हैं। आप की विलादत शरीफ़ वाक़िअ़ए करबला से तक़रीबन तीन साल पहले 3 सफ़रुल मुज़फ़्फ़र 57 हिजरी बरोज़ जुमुअ़तुल मुबारक मदीनए पाक में हुई।

(مسالک السالکین، جلد 1 صفحہ 213, तारीख़े मशाइख़े क़ादिरिय्या, स. 75)

सय्यिदे सज्जाद के सदक़े में साजिद रख मुझे इल्मे ह़क़ दे बाक़िरे इल्मे हुदा के वासित़े

बाक़िर कहने की वज्ह

आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه को बाक़िर कहने की वज्ह "अस्सवाइ़कुल मुह़रिक़ा" में येह बयान की गई है कि "बक़रुल अर्द़" ज़मीन फाड़ने और उस के छुपे ख़ज़ानों के निकालने को कहते हैं इसी त़रह़ आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने **अल्लाह** पाक के अह़कामात के अन्दर राज़ व मा'रिफ़त के छुपे ख़ज़ानों को ज़ाहिर फ़रमा कर उन की ह़िक्मतें बयान फ़रमाईं। मज़ीद येह भी है "बाक़िर" इ़ल्म को चीरने वाले को कहते हैं चूंकि आप वसीउ़ल इ़ल्म (या'नी बहुत ज़ियादा इ़ल्म रखने वाले) थे लिहाज़ा आप को बाक़िर कहा गया। (صواعق المحرقہ، ص 201) ह़ज़रते इमाम बाक़िर رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के चार साह़िब

ज़ादे और तीन साहिब ज़ादियां थीं, और एक क़ौल के "मुताबिक़ पांच साहिब ज़ादे और दो साहिब ज़ादियां हैं।" (मिरआतुल मनाजीह, 8/621)

शाने इमामे बाक़िर

ऐ आशिक़ाने सहाबा व अहले बैत ! **अल्लाह** पाक का हम पर बड़ा एहसान है कि उस ने अपने प्यारों के साथ हमारी निस्बतो अक़ीदत रखी है। اَلْحَمْدُلِلّٰه हमारी निस्बत कैसी प्यारी है कि प्यारे प्यारे इमाम बाक़िर رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه हमारे पीरो मुर्शिद हैं और आप की मुबारक ज़ात पर हसनी हुसैनी सादाते किराम का सिल्सिला मिल जाता है क्यूं कि आप के वालिदे मोहतरम हज़रते इमाम ज़ैनुल आबिदीन رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه, इमामे आली मक़ाम इमामे हुसैन رَضِیَ اللهُ عَنْه के शहज़ादे हैं और आप की अम्मीजान नवासए रसूल हज़रते इमाम हसन मुज्तबा رَضِیَ اللهُ عَنْه की शहज़ादी हैं, येही नहीं बल्कि मुसल्मानों के पहले ख़लीफ़ा हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللهُ عَنْه से भी आप का गहरा रिश्ता है चुनान्चे हज़रते सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللهُ عَنْه के शहज़ादे हज़रते मुहम्मद बिन अबू बक्र رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه मौला अली رَضِیَ اللهُ عَنْه की तरफ़ से मिस्र के वाली मुक़र्रर हुए, इन के शहज़ादे "हज़रते क़ासिम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की शहज़ादी हज़रते फ़र्वह बिन्ते क़ासिम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهَا का निकाह हज़रते इमाम बाक़िर رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه से हुवा तो उन से सिल्सिलए क़ादिरिय्या रज़विय्या अत्तारिय्या के छटे शैख़े तरीक़त हज़रते इमाम जा'फ़रे सादिक़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه पैदा हुए तो (यूं) सिद्दीक़े अक्बर तमाम सय्यिदों के नाना हैं और अली मुर्तज़ा सय्यिदों के दादा (हैं)।"

(मिरआतुल मनाजीह, 8/622 मुलख़्ख़सन)

सह़ाबए किराम व अहले बैत की मह़ब्बतें

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! सह़ाबए किराम और अहले बैते इ़ज़ाम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की मह़ब्बत राहे नजात है, बरोज़े क़ियामत शफ़ाअ़ते मुस्त़फ़ा से ह़िस्सा पाने के लिये सह़ाबए किराम और अहले बैते अत़्हार की ग़ुलामी का पट्टा गले में होना ज़रूरी है। सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की अहले बैते अत़्हार से अ़क़ीदतो मह़ब्बत के कई वाक़िआ़त हैं, ऐसे ही अहले बैते अत़्हार के सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان से उल्फ़तो शफ़्क़त के भी बे शुमार अन्दाज़ हैं जैसा कि इमाम बाक़िर رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की पोती, इमाम जा'फ़रे सादिक़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की साह़िब ज़ादी का नाम मुसल्मानों की प्यारी प्यारी अम्मीजान ह़ज़रते बीबी आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللهُ عَنْهَا के मुबारक नाम पर था। आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهَا का मज़ार शरीफ़ आज भी मिस्र में मौजूद है और आप के मज़ार शरीफ़ के साथ जो मस्जिद है उसे आप की निस्बत की वज्ह से मस्जिदे आ़इशा कहा जाता है। आ़शिक़े सह़ाबा व अहले बैत, बानिये दा'वते इस्लामी, अमीरे अहले सुन्नत क्या ख़ूब लिखते हैं :

आलो अस्ह़ाबे नबी के जिस क़दर चाहने वाले हैं सारों को सलाम

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

सोने की ज़न्जीर

अह़ादीसे मुबारका मुख़्तलिफ़ रावियों से रिवायत की जाती हैं, उन में मुह़द्दिसीने किराम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِم ह़ज़रते इमाम जा'फ़रे सादिक़ की इमाम बाक़िर से और आप की इमाम ज़ैनुल आ़बिदीन बिन इमाम ह़ुसैन

बिन अ़लिय्युल मुर्तज़ा رِضْوَانُ اللهِ عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن से की जाने वाली रिवायत को ''सिल्सिलतुज़्ज़हब'' या'नी सोने की ज़न्जीर कहते हैं।

(مرقات المفاتیح، 10/657، تحت الحدیث:6287)

आलो अस्हाबे नबी सब बादशह हैं बादशाह मैं फ़क़त अदना गदा अस्हाबो अहले बैत का

इल्मी वजाहत

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ता رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : मैं ने इमाम बाक़िर رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के इ़लावा उ़लमा में से ऐसा कोई नहीं देखा जिस के पास उ़लमा का इ़ल्म भी कम पड़ जाए, मैं ने ह़कम बिन उ़यैना को उन की ख़िदमत में इस त़रह़ बैठे देखा गोया त़ालिबे इ़ल्म हो।

(حلیۃ الاولیاء، 3/217، حدیث:3757)

जिन्नात मसाइल के ह़ल के लिये ह़ाज़िर होते

एक शख़्स का बयान है कि मैं ने ह़ज़रते इमाम बाक़िर رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه से मुलाक़ात की इजाज़त मांगी तो लोगों ने कहा : जल्दी से काम न लो क्यूं कि इन के हां और भी बहुत से आदमी बैठे हुए हैं और आप अभी बाहर तशरीफ़ नहीं लाए हैं, इतने में 12 आदमी तंग क़बाएं और हाथ पाउं में दस्ताने मोज़े पहने हुए बाहर आए। उन्हों ने ''اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ'' कहा और चले गए। जब मैं ह़ज़रते इमाम बाक़िर رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की ख़िदमते बा बरकत में ह़ाज़िर हुवा तो पूछा : ह़ज़रत ! येह कौन लोग थे जो अभी आप के पास से उठ कर गए हैं ? आप ने फ़रमाया : येह तुम्हारे भाई जिन्नात थे। मैं ने ह़ैरान हो कर अ़र्ज़ किया : क्या आप उन्हें देख लेते हैं ? फ़रमाया : हां !

जिस त़रह़ तुम मुझ से ह़लाल व ह़राम के बारे में मसाइल पूछते हो इस त़रह़ येह भी आ कर मुझ से मसाइल सीखते हैं। (شواہد النبوۃ، ص239)

शजरा ब ज़बाने अ़रबी

मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने एक त़वील अ़रबी शजरए त़रीक़त ब सीग़ए दुरूद तह़रीर फ़रमाया है उस में ह़ज़रते इमाम बाक़िर رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه का ज़िक्रे ख़ैर इन अल्फ़ाज़ से करते हैं :

اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ وَبَارِكْ عَلَيْهِ وَعَلَيْهِمْ وَعَلَى الْمَوْلَى السَّيِّدِ الْاِمَامِ مُحَمَّدِ بْنِ عَلِيِّ نِ الْبَاقِرِ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا

तरजमा : ऐ **अल्लाह** पाक ! तू हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर और सरदार व मौला मुह़म्मद बिन अ़ली इमाम बाक़िर رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا पर दुरूदो सलाम भेज और इन पर बरकत नाज़िल फ़रमा।

(तारीख़ व शर्ह़ शजरए क़ादिरिय्या बरकातिय्या रज़विय्या, स. 108)

इसी त़रह़ अपने एक फ़ारसी शजरे में ह़ज़रते इमाम बाक़िर رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه से इन अश्आ़र की सूरत में इस्तिग़ासा (या'नी फ़रियाद) करते हैं :

باقرا یا عالمِ سادات یا بحرِ العُلوم　　از علومِ خود بدفعِ جہلِ ما اِمداد کُن

या'नी ऐ इमाम बाक़िर ! आप सादाते किराम के बहुत बड़े आ़लिम और उ़लूम का समुन्दर हैं। **अल्लाह** करीम की त़रफ़ से अ़त़ा किये गए उन उ़लूम से मेरी जहालत दूर फ़रमा कर मेरी मदद कीजिये।

(तारीख़ व शर्ह़ शजरए क़ादिरिय्या बरकातिय्या रज़विय्या, स. 128)

इबादत व मुनाजात

ह़ज़रते इमाम बाक़िर رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه अपने वालिदे मोह़तरम की त़रह़ बड़े आ़बिदो ज़ाहिद थे, हर वक़्त इबादत में मसरूफ़ रहते । आप के शहज़ादे ह़ज़रते इमाम जा'फ़रे सादिक़ رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : मेरे वालिदे मोह़तरम आधी रात के वक़्त बारगाहे इलाही में अ़र्ज़ करते : "ऐ **अल्लाह** पाक ! तू ने मुझे हुक्म दिया लेकिन मैं ने बजा आवरी न की, मुझे मन्अ़ फ़रमाया लेकिन मैं बाज़ न आया, तेरा येह बन्दा तेरी बारगाह में ह़ाज़िर है और इस के पास कोई उ़ज़्र नहीं है ।" (حلیۃ الاولیاء، 3/217، حدیث: 3760) ऐ ख़ुदा ! रात आ गई और दुन्यावी बादशाहों की हुकूमत ख़त्म हो गई, आस्मान पर सितारे निकल आए और लोग सो गए । ऐ पाक परवर्दगार ! तू ज़िन्दा, हमेशा रहने वाला और देखने वाला है, तेरी ज़ात पाक है तू नींद और ऊंघ से पाक है तेरी ज़ात किसी मांगने वाले को ख़ाली नहीं लौटाती ।

(तारीख़े मशाइख़े क़ादिरिय्या रज़विय्या बरकातिय्या, स. 82)

पए ह़ुसैनो ह़सन फ़ात़िमा अ़ली ह़ैदर हमारे बिगड़े हुए काम दे बना या रब

आ़दाते मुबारका

ह़ज़रते ख़ालिद बिन दीनार رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه बयान करते हैं कि ह़ज़रते मुह़म्मद बिन अ़ली बाक़िर رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه जब मुस्कुराते तो बारगाहे इलाही में अ़र्ज़ करते : "ऐ **अल्लाह** पाक ! मुझ से नाराज़ न होना ।" (صفۃ الصفوۃ، 2/78) ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन यह़्या رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه बयान करते हैं : मैं ने ह़ज़रते इमाम अबू जा'फ़र मुह़म्मद बिन अ़ली बाक़िर رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه को ज़र्द रंग का

तहबन्द बांधे देखा, आप फ़र्ज़ नमाज़ों के इ़लावा दिन रात में 50 रक्अ़तें अदा फ़रमाते थे। आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की मुबारक अंगूठी पर लिखा हुवा था : اَلْقُوَّةُ لِلّٰهِ جَمِيْعًا या'नी सारा ज़ोर ख़ुदा को है।

(حلیۃ الاولیاء، 3/217، حدیث: 3758۔3/213، حدیث: 3737)

मौला अ़ली के नज़्दीक पहले ख़लीफ़ा
ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़

इमाम जा'फ़रे सादिक़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه अपने वालिदे मोह़तरम ह़ज़रते इमाम बाक़िर رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه से रिवायत करते हैं कि ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللهُ عَنْه बैअ़त हो जाने के बा'द सात दिन तक लोगों को (आ़जिज़ी के त़ौर पर) बैअ़त तोड़ने का कहते रहे। सातवें दिन ह़ज़रते अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा رَضِیَ اللهُ عَنْه तशरीफ़ लाए और अ़र्ज़ किया : "न हम आप से की गई बैअ़त तोड़ेंगे और न ही ऐसा मुत़ालबा करेंगे, अगर हम आप को अह्ल न समझते तो कभी बैअ़त न करते।" (الریاض النضرۃ، 1/252)

हुए फ़ारूक़ो उ़स्मानो अ़ली जब दाख़िले बैअ़त बना फ़ख़्रे सलासिल सिल्सिला सिद्दीक़े अक्बर का

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ और
ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म के बारे में

ह़ज़रते इमाम बाक़िर رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه इर्शाद फ़रमाते हैं : ह़ज़रते बीबी फ़ात़िमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللهُ عَنْهَا की सारी आल का इस बात पर इज्माअ़ व इत्तिफ़ाक़ है कि ह़ज़रते अबू बक्र व उ़मर رَضِیَ اللهُ عَنْهُمَا के ह़क़ में वोह बात

कहें जो सब से बेहतर हो। (ज़ाहिर है कि सब से बेहतर बात उसी के ह़क़ में कही जाएगी जो सब से बेहतर हो।) (الصواعق المحرقہ، ص52)

जो आप को सिद्दीक़ न कहे.....?

ह़ज़रते उ़र्वह बिन अ़ब्दुल्लाह رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه से रिवायत है कि मैं ह़ज़रते इमाम बाक़िर अबू जा'फ़र मुह़म्मद बिन अ़ली बिन ह़ुसैन رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा और उन से अ़र्ज़ किया : तल्वार को सजाने के बारे में आप क्या फ़रमाते हैं ? आप ने फ़रमाया : इस में कोई ह़रज नहीं क्यूं कि ख़ुद ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने भी अपनी तल्वार को आरास्ता किया। मैं ने अ़र्ज़ किया : "आप ने उन्हें सिद्दीक़ कहा ?" येह सुनना था कि ह़ज़रते इमाम बाक़िर رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه जलाल फ़रमाते हुए उठ खड़े हुए और क़िब्ले की त़रफ़ मुंह कर के इर्शाद फ़रमाया : "हां ! वोह सिद्दीक़ हैं, हां ! वोह सिद्दीक़ हैं, हां ! वोह सिद्दीक़ हैं। और जो उन्हें सिद्दीक़ न कहे तो **अल्लाह** पाक उस की बात को दुन्या व आख़िरत में सच्चा नहीं फ़रमाता।" (فضائل الصحابۃ، 1/419، الرقم:655)

उ़मर से भी वोह अफ़्ज़ल हैं वोह उ़स्मां से भी हैं आ'ला
यक़ीनन पेश्वाए मुर्तज़ा सिद्दीक़े अक्बर हैं

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

सह़ाबए किराम के बारे में दर्से मह़ब्बत

ह़ज़रते अ़ब्दुल मलिक बिन अबू सुलैमान رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه बयान करते हैं : मैं ने ह़ज़रते इमाम बाक़िर رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه से इस आयते मुबारका :

اِنَّمَا وَلِيُّكُمُ اللّٰهُ وَ رَسُوْلُهٗ وَ الَّذِیْنَ اٰمَنُوا الَّذِیْنَ یُقِیْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَ یُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَ هُمْ رٰكِعُوْنَ ۝۵۵

(پ6، المائدہ:55)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : तुम्हारे दोस्त नहीं मगर **अल्लाह** और उस का रसूल और ईमान वाले कि नमाज़ क़ाइम करते हैं और ज़कात देते हैं और **अल्लाह** के हुज़ूर झुके हुए हैं।

की तफ़्सीर पूछी तो फ़रमाया : "इस आयत के मिस्दाक़ सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان हैं।" मैं ने अ़र्ज़ की : लोग कहते हैं कि इस आयत के मिस्दाक़ मुसल्मानों के चौथे ख़लीफ़ा ह़ज़रते अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه हैं। फ़रमाया : "वोह भी सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ही में से हैं।"

(تاریخ ابن عساکر، 54/289)

अहले बैत से मह़ब्बत के झूटे दा'वेदार

इमाम बाक़िर رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने जाबिर जो'फ़ी से फ़रमाया : ऐ जाबिर ! मुझे ख़बर मिली है कि इ़राक़ में कुछ लोग हैं जो हम (या'नी अहले बैत) से मह़ब्बत का दा'वा करते हैं लेकिन अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ और अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمَا की शान में न कहने वाली बातें करते और येह कहते हैं कि मैं ने उन्हें इस का हुक्म दिया है, उन्हें पहुंचा दो कि मैं बारगाहे इलाही में उन से बराअत का इज़्हार करता हूं। अगर मैं शैख़ैने करीमैन (या'नी ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ और उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمَا) के लिये बुलन्द दरजात व रह़मत की दुआ़ न करूं तो मुझे मेरे नानाजान

صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शफ़ाअ़त नसीब न हो। इन ह़ज़रात से **अल्लाह** पाक के दुश्मन ही ग़ाफ़िल व बेज़ार हैं। (البدایہ والنہایہ، 6/457)

शैख़ैने करीमैन से जुदा अहले बैत से जुदा है

एक और मौक़अ़ पर आप ने जाबिर जो'फ़ी से फ़रमाया : कूफ़े वालों तक येह बात पहुंचा देना कि जिस ने शैख़ैने करीमैन (या'नी ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ और उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللهُ عَنْهُمَا) की शान में गुस्ताख़ी की मैं उस से बरिय्युज़्ज़िम्मा और शैख़ैने करीमैन (या'नी ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ और उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللهُ عَنْهُمَا) से राज़ी हूं। जो शख़्स ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ और उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللهُ عَنْهُمَا की फ़ज़ीलत नहीं जानता वोह सुन्नत (या'नी ह़दीस) से ना वाक़िफ़ है।

(حلیۃ الاولیاء، 3/217، حدیث: 3753-3754)

इस इमामत से खुला तुम हो इमामे अक्बर थी येह ही रम्ज़े नबी कहते हैं ह़ैदर सिद्दीक़

अल्लाह पाक की ता'रीफ़ के जामेअ़ कलिमात

ह़ज़रते इमाम जा'फ़रे सादिक़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه बयान करते हैं कि एक मरतबा मेरे वालिदे मोह़तरम ह़ज़रते मुह़म्मद बिन अ़ली बाक़िर رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه का ख़च्चर गुम हो गया, आप ने फ़रमाया : "अगर **अल्लाह** पाक उसे लौटा दे तो मैं उस की ऐसी ह़म्द (या'नी ता'रीफ़) बयान करूंगा जिस से वोह राज़ी हो जाएगा।" थोड़ी ही देर बा'द **अल्लाह** पाक ने उसे ज़ीन व लगाम समेत लौटा दिया, आप उस पर सुवार हुए, जब दुरुस्त हो कर बैठ गए तो कपड़े समेट कर आस्मान की त़रफ़ सर उठाया और "اَلْحَمْدُ لِلّٰه"

कहा, इस के इलावा कुछ न कहा। जब आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه से इस बारे में पूछा गया तो फ़रमाया : "क्या मैं ने कुछ छोड़ दिया या कुछ बाक़ी रखा ? मैं ने तो तमाम ता'रीफ़ें **अल्लाह** पाक ही के लिये कर दी हैं।"

(موسوعہ ابن ابی الدنیا، 1/497، حدیث:105)

अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

बुरी मौत से बचने का नुस्ख़ा

इमाम औज़ाई رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه बयान करते हैं कि मैं ने मदीनए पाक में इमाम बाक़िर رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की ख़िदमत में ह़ाज़िर हो कर **अल्लाह** पाक के फ़रमान :

يَمْحُوا اللّٰهُ مَا يَشَآءُ وَيُثْبِتُ ۚۖ وَعِنْدَهٗۤ اُمُّ الْكِتٰبِ ﴿۳۹﴾ (پ13، الرعد:39)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : अल्लाह जो चाहे मिटाता और साबित करता है और अस्ल लिखा हुवा उसी के पास है।

की तफ़्सीर के बारे में पूछा तो आप ने फ़रमाया : हां ! मुझे मेरे वालिदे मोह़तरम ने अपने जद्दे अमजद अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते मौला अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللهُ عَنْه से रिवायत करते हुए बयान किया कि वोह फ़रमाते हैं : मैं ने इस आयत के बारे में **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से पूछा तो आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "ऐ अ़ली ! मैं इस आयत के साथ तुम्हें ख़ुश ख़बरी देता हूं और तुम वोह ख़ुश ख़बरी मेरे बा'द मेरी

उम्मत को सुनाना कि दुरुस्त त़रीक़े से सदक़ा देना, भलाई करना, वालिदैन के साथ हुस्ने सुलूक करना और सिलए रेह्मी करना येह बद बख़्ती को नेक बख़्ती से बदलता, उ़म्र में इज़ाफ़ा करता और बुरी मौत से बचाता है।"

(حلیۃ الاولیاء، 6/156، حدیث:8140)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! वालिदैन से अच्छा सुलूक करना बिल ख़ुसूस जब उन्हें हमारी ख़िदमत की ज़रूरत हो या वोह बुढ़ापे को पहुंच चुके हों ऐसे में हर त़रह़ से उन की ख़िदमत के लिये हर वक़्त तय्यार रहना बड़ी ही सआ़दत की बात है, तमाम आ़शिक़ाने सह़ाबा व अहले बैत को चाहिये कि अपने ज़ी रेह्म रिश्तेदारों के साथ भी हुस्ने सुलूक करें, अगर वोह हम से किसी नाराज़ी के सबब रिश्तेदारी तोड़ें तो तब भी हम रिश्ता जोड़ने ही की कोशिश करें क्यूं कि अगर कोई आप से अच्छा सुलूक करे और आप भी उस से अच्छा सुलूक करें तो येह अदला बदला हो गया, कमाल तो तब है कि जब कोई हम से अच्छा सुलूक न करे और हम उस से भलाई और ख़ुश अख़्लाक़ी से पेश आएं। ह़दीसे पाक में है : जो तुम से तोड़े तुम उस से जोड़ो। जो तुम्हें मह़रूम करे तुम उस को अ़त़ा करो और जो तुम पर ज़ुल्म करे तुम उसे मुआ़फ़ करो। (معجم اوسط، 4/160، حدیث:5567)

इमाम बाक़िर رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : सब से ज़ियादा जल्द हुसूले सवाब का बाइ़स बनने वाला अ़मल सिलए रेह्मी है और सब से ज़ियादा जल्द सज़ा का सबब बनने वाला अ़मल बग़ावत व सरकशी है। (حلیۃ الاولیاء، 3/219، رقم:3768) रिश्तेदारों से बिला इजाज़ते शर्ई तअ़ल्लुक़

तोड़ने वाले की नुहूसत तो देखिये ! ह़ज़रते इमाम ज़ैनुल आ़बिदीन رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने अपने शहज़ादे इमाम बाक़िर رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه को रिश्ता तोड़ने वाले की सोह़बत से भी बचने की नसीह़त फ़रमाई जैसा कि

शहज़ादे की अपने शहज़ादे को नसीह़तें

ह़ज़रते मुह़म्मद बिन अ़ली बाक़िर رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : मेरे वालिदे मोह़तरम ह़ज़रते इमाम ज़ैनुल आ़बिदीन رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने मुझे नसीह़त करते हुए फ़रमाया : "पांच क़िस्म के लोगों की न तो सोह़बत इख़्तियार करना, न उन से गुफ़्तगू करना और न ही सफ़र में उन की रफ़ाक़त (या'नी साथ) इख़्तियार करना।" मैं ने अ़र्ज़ की : मैं आप पर क़ुरबान ! वोह कौन हैं ? फ़रमाया : "फ़ासिक़ की सोह़बत इख़्तियार न करना क्यूं कि वोह तुझे एक या एक से कम लुक़्मे के बदले में बेच देगा।" मैं ने अ़र्ज़ की : "लुक़्मे से कम" से क्या मुराद है ? फ़रमाया : "लुक़्मे का लालच करेगा लेकिन उसे ह़ासिल नहीं कर सकेगा।" मैं ने अ़र्ज़ की : दूसरा शख़्स ? फ़रमाया : "बख़ील (या'नी कन्जूस) की सोह़बत में न बैठना क्यूं कि वोह ऐसे वक़्त में तुझ से माल रोक लेगा जब तुझे उस की सख़्त ज़रूरत होगी।" मैं ने अ़र्ज़ की : तीसरा कौन है ? फ़रमाया : "झूटे की सोह़बत में न बैठना क्यूं कि वोह सराब की त़रह़ है जो तुझ से क़रीब को दूर और दूर को क़रीब कर देगा।" मैं ने अ़र्ज़ की : चौथा शख़्स ? फ़रमाया : "बे वुक़ूफ़ की सोह़बत इख़्तियार करने से बचना क्यूं कि वोह तुझे फ़ाएदा पहुंचाने की कोशिश में नुक़्सान पहुंचा देगा।" मैं ने अ़र्ज़ की : पांचवां शख़्स कौन है ?

फ़रमाया : ''रिश्तेदारों से क़त्ए तअ़ल्लुक़ करने वाले की सोह़बत में बैठने से बचना क्यूं कि मैं ने किताबुल्लाह में तीन मक़ामात पर उसे मल्ऊ़न (या'नी **अल्लाह** पाक की रह़मत से दूर) पाया है ।'' (حلیۃ الاولیاء، 3/215، حدیث: 3745) इमाम बाक़िर رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने अपने बेटे से फ़रमाया : ''ऐ बेटे ! सुस्ती और तंगदिली से बचना क्यूं कि येह हर बुराई की चाबी हैं कि अगर सुस्ती का शिकार होगे तो ह़क़ अदा नहीं कर पाओगे और अगर तंगदिली का शिकार होगे तो ह़क़ पर सब्र नहीं कर सकोगे ।''

(صفۃ الصفوۃ، 2/78)

सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की ज़ियारत

आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه मदीनए पाक के अ़ज़ीमुश्शान ताबेई और बहुत बड़े फ़ुक़हा व मुह़द्दिसीन में से हैं । आप ने सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان में से ख़ादिमुन्नबी ह़ज़रते अनस, ह़ज़रते जाबिर और ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللهُ عَنْهُم से मुलाक़ात का शरफ़ ह़ासिल किया और इन ह़ज़रात से अह़ादीसे मुबारका भी रिवायत कीं ।

अहले बैते पाक के ग़ुलाम के लिये ख़ुश ख़बरी

ऐ आ़शिक़ाने सह़ाबा व अहले बैत ! अल्लाह वाले बे ज़बान जानवरों की बोलियां भी समझ लेते हैं बल्कि उन की फ़रियाद पर उन की मदद भी फ़रमाते हैं जैसा कि एक शख़्स का बयान है : मैं इमाम बाक़िर رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के साथ मक्के और मदीने की दरमियानी वादी में सफ़र कर रहा था, उस वक़्त आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه एक ख़च्चर पर सुवार थे और मैं एक

गधे पर सुवार था। अचानक मैं ने देखा कि कोई शख़्स पहाड़ से उतर कर उन के क़रीब आया और वोह आप के ख़च्चर की निगरानी करता रहा और एक भेड़िया अपने हाथों को ख़च्चर की ज़ीन के आगे रख कर देर तक इमाम बाक़िर رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه से गुफ़्तगू करता रहा। फिर आप ने उस भेड़िये से फ़रमाया : "अब तुम वापस चले जाओ, जो तुम चाहते थे मैं ने उस तरह़ कर दिया है।" भेड़िया येह सुन कर वापस हो लिया। फिर आप ने अपने साथी से इर्शाद फ़रमाया : क्या तुम जानते हो इस भेड़िये ने मुझ से क्या कहा ? उस ने अ़र्ज़ किया : **अल्लाह** पाक, उस का रसूल और उस के बेटे (या'नी आप) ही बेहतर जानते हैं। आप ने इर्शाद फ़रमाया : भेड़िया फ़रियाद कर रहा था : मेरा बच्चा पैदा होने वाला है इस ह़वाले से दुआ़ कर दें और **अल्लाह** पाक की बारगाह में अ़र्ज़ करें कि वोह मेरी नस्ल से किसी को भी आप से मह़ब्बत करने वाले पर मुसल्लत़ न करे। चुनान्चे आप ने उस की दरख़्वास्त बारगाहे इलाही में पेश कर दी। (شواہد النبوۃ، ص239)

सह़ाबा का गदा हूं और अहले बैत का ख़ादिम येह सब है आप ही की तो इनायत या रसूलल्लाह

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

रिज़्क़ का सुवाल

एक मरतबा इमाम बाक़िर رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने चिड़ियों की चह्चहाहट सुनी तो पास मौजूद एक शख़्स से फ़रमाया : जानते हो येह क्या कह रही

हैं ? उस ने अ़र्ज़ की : नहीं । फ़रमाया : "येह मेरे रब की पाकी बयान करते हुए आज के रिज़्क़ का सुवाल कर रही हैं ।"

(حلیۃ الاولیاء، 3/219، حدیث:3766)

इमाम बाक़िर से इमामे आ'ज़म की मुलाक़ात

फ़िक़्हे ह़नफ़ी के बहुत बड़े आ़लिमे दीन, ह़ज़रते इमाम अबू यूसुफ़ رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه बयान करते हैं कि मैं ने अपने उस्ताज़ ह़नफ़िय्यों के इमाम, इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه से अ़र्ज़ किया : क्या आप की इमाम बाक़िर رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه से मुलाक़ात हुई है ? तो आप ने फ़रमाया : जी ! मैं ने उन से मुलाक़ात की है और मैं ने उन से एक मस्अला मा'लूम किया तो आप ने उस का बड़ा शानदार जवाब अ़ता फ़रमाया जो मैं ने इन से पहले किसी से नहीं सुना ।

(तारीख़े मशाइख़े क़ादिरिय्या रज़विय्या बरकातिय्या, स. 81)

शहज़ादए आ़ली वक़ार की गुस्ताख़ी का अन्जाम

एक मरतबा बादशाह ने ह़ज़रते इमाम बाक़िर رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه को مَعَاذَاللهِ शहीद करने के इरादे से अपने पास बुलवाया । जैसे ही आप बादशाह के पास तशरीफ़ लाए तो बादशाह मुआ़फ़ी मांगने लगा और कुछ तह़ाइफ़ पेश कर के बड़े अदबो एह़तिराम से रुख़्सत करने लगा । आप के तशरीफ़ ले जाने के बा'द लोगों ने बादशाह से कहा : तू ने उन्हें शहीद करने के इरादे से नहीं बुलवाया था ? बादशाह ने कहा : इमाम बाक़िर رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه जब मेरे क़रीब तशरीफ़ लाए तो मैं ने दो बड़े ग़ज़ब नाक शेरों

को देखा जो उन के दाएं बाएं खड़े मुझ से कह रहे थे अगर तुम ने ज़र्रा बराबर गुस्ताख़ी की तो हम तुम्हें चीरफाड़ कर रख देंगे।

(तारीख़े मशाइख़े क़ादिरिय्या रज़विय्या बरकातिय्या, स. 83)

फ़रामीने इमाम बाक़िर

ऐ आ़शिक़ाने सह़ाबा व अहले बैत ! औलियाए किराम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِم के इर्शादात हमारे लिये मश्अ़ले राह या'नी ज़िन्दगी गुज़ारने के बेहतरीन नुस्ख़े होते हैं, उन पर अ़मल कर के हम अपनी दुन्या व आख़िरत को बेहतर बना सकते हैं नीज़ उन के मुख़्तसर फ़रामीन में इल्मो ह़िक्मत के अनमोल ख़ज़ाने होते हैं। इमाम बाक़िर رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के कुछ फ़रामीन मुलाह़ज़ा कीजिये :

❀ घटिया लोगों का सलाम बुरी गुफ़्तगू है। (या'नी बुरे लोग अपनी बात बुरी गुफ़्तगू से शुरूअ़ करते हैं।) (صفۃ الصفوہ، 2/77)

❀ हर चीज़ के लिये कोई न कोई आफ़त होती है और इल्म की आफ़त भूलना है। (البدایہ والنہایہ، 6/456)

❀ वोह आ़लिम जिस के इल्म से फ़ाएदा ह़ासिल किया जाए हज़ार आ़बिदों से अफ़्ज़ल है। (حلیۃ الاولیاء، 3/214، رقم:3740)

❀ **अल्लाह** पाक की क़सम ! एक आ़लिम की मौत शैत़ाने लईन को 70 आ़बिदों (या'नी इ़बादत गुज़ारों) की मौत से ज़ियादा पसन्द है। (صفۃ الصفوہ، 2/77)

❀ "तीन आ'माल सब से ज़ियादा मुश्किल हैं : ﴿1﴾ हर ह़ाल में

अल्लाह पाक का ज़िक्र करते रहना ﴿2﴾ अपने आप से इन्साफ़ करना और ﴿3﴾ ज़रूरत मन्द मुसल्मान भाई से माली तआ़वुन करना।''

(تفسیر در منثور، پ9، الانفال، تحت الآیۃ:45، 4/75)

❀ लड़ाई झगड़े से बचना क्यूं कि येह दिलों को बिगाड़ता और निफ़ाक़ पैदा करता है। (حلیۃ الاولیاء، 3/215، رقم:3749)

❀ **अल्लाह** पाक की आयात में ख़्वाह म ख़्वाह बह्सो मुबाह़सा करने वाले लोग ही झगड़ालू हैं। (حلیۃ الاولیاء، 3/216، رقم:3750)

❀ ह़ज़रते साबित رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه बयान करते हैं कि ह़ज़रते मुह़म्मद बिन अ़ली बाक़िर رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه इस फ़रमाने बारी तआ़ला :

اُولٰٓىِٕكَ يُجْزَوْنَ الْغُرْفَةَ بِمَا صَبَرُوْا (پ19، الفرقان:75)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : उन को जन्नत का सब से ऊंचा बालाख़ाना इन्आ़म मिलेगा बदला उन के सब्र का।

की तफ़्सीर करते हुए फ़रमाते हैं : (येह इन्आ़म उन्हें) दुन्या में फ़क़्रो फ़ाक़ा पर सब्र करने की वज्ह से मिलेगा।

(تفسیر در منثور، پ19، الفرقان، تحت الآیۃ:75، 6/285)

❀ ''मेरा एक भाई है जो मेरे नज़्दीक बड़ी इ़ज़्ज़तो अ़ज़मत रखता है और मेरे नज़्दीक उस की अ़ज़मत की वज्ह उस की नज़र में दुन्या का ह़क़ीर होना है।'' (صفۃ الصفوۃ، 2/78)

❀ ''जिसे हुस्ने ख़ुल्क़ और नरमी अ़ता की गई उसे तमाम भलाई व राह़त दी गई और दुन्या व आख़िरत में उस का ह़ाल बेहतर होगा और जो हुस्ने

ख़ुल्क़ व भलाई से महरूम रहा तो येह हर बुराई व मुसीबत का रास्ता है मगर वोह जिसे **अल्लाह** इस से महफ़ूज़ रखे।" (حلیۃ الاولیاء، 3/218، رقم:3762)

❀ उ़बैदुल्लाह बिन वलीद का बयान है कि ह़ज़रते मुह़म्मद बिन अ़ली बाक़िर رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने हम से फ़रमाया : "क्या तुम में से कोई अपने भाई की जेब में हाथ डाल कर अपनी ख़्वाहिश के मुत़ाबिक़ कुछ ले सकता है?" हम ने अ़र्ज़ की : नहीं। फ़रमाया : "फिर तुम्हारे दरमियान वोह भाईचारा नहीं जैसा तुम गुमान करते हो।" (حلیۃ الاولیاء، 3/218، رقم:3763)

❀ "तुम्हारे भाई के दिल में तुम्हारी कितनी महब्बत है इस का अन्दाज़ा तुम इस बात से लगाओ कि अपने भाई की तुम्हारे दिल में कितनी महब्बत है।" (صفۃ الصفوۃ، 2/79)

❀ जाबिर जो'फ़ी से फ़रमाया : "ऐ जाबिर! दुन्या को उस मक़ाम की त़रह़ समझ जहां तू कुछ देर के लिये ठहरा फिर कूच कर गया या उस माल की त़रह़ समझ जिसे तू ने ख़्वाब में पाया लेकिन जब आंख खुली तो तेरे हाथ में कुछ न था। दुन्या अ़क़्ल मन्दों और मा'रिफ़ते इलाही रखने वालों के लिये साए की मानिन्द है। पस तू **अल्लाह** पाक से अपने दीन व अ़क़्ल की ह़िफ़ाज़त का सुवाल कर।" (حلیۃ الاولیاء، 3/218، رقم:3765)

❀ अपनी पसन्दीदा चीज़ों में हम **अल्लाह** पाक की इबादत करते हैं, अगर कोई चीज़ हमारी पसन्द के ख़िलाफ़ वाक़ेअ़ हो तो **अल्लाह** पाक की पसन्दीदा चीज़ों में हम उस की ना फ़रमानी नहीं करते।"

(شعب الایمان، 7/244، حدیث:10171)

❀ "**अल्लाह** पाक को सब से ज़ियादा महबूब उस से सुवाल करना और मांगना है और क़ज़ा को दुआ ही से टाला जा सकता है। सब से ज़ियादा जल्द हुसूले सवाब का बाइस बनने वाला अमल सिलए रेहमी है और सब से ज़ियादा जल्द सज़ा का सबब बनने वाला अमल बग़ावत व सरकशी है। आदमी के ऐबदार होने के लिये येही काफ़ी है कि वोह लोगों में उस ऐब को देखे जिसे खुद में देखने से अन्धा हो और लोगों को उस चीज़ का हुक्म दे जिसे खुद से दूर नहीं कर सकता और अपने हम नशीनों को बिला वज्ह तक्लीफ़ पहुंचाए।" (البدایہ والنہایہ، 6/457)

इन्तिक़ाल शरीफ़

हज़रते इमाम बाक़िर رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه का इन्तिक़ाल शरीफ़ 7 ज़ुल हिज्जतिल हराम 114 या 117 हिजरी को हुवा। (शर्हे शजरए क़ादिरिय्या रज़विय्या अत्तारिय्या, स. 54 ता 56) दुन्या के सब से अफ़्ज़ल क़ब्रिस्तान जन्नतुल बक़ीअ में हज़रते अब्बास رَضِیَ اللهُ عَنْه के मज़ार शरीफ़ के क़रीब आप की तदफ़ीन हुई। (جامع کرامات الاولیا، 1/164) आप की वसिय्यत के मुताबिक़ आप को आप के नमाज़ वाले लिबास में कफ़न दिया गया। **अल्लाह** करीम हमें सच्चा गुलामे सहाबा व अहले बैत बनाए और इन की गुलामी में जीना मरना नसीब फ़रमाए। اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

अगले हफ़्ते का रिसाला